पाठ 17. मन की इच्छा

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में रचनात्मक विचार संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे चीज़ों व घटनाओं को देखने और करने का अभिनव तरीका अपना सकें। इस पाठ के माध्यम से लेखक ने बताना चाहा है कि हम जो कुछ भी हैं और हमारे पास जो कुछ भी है उसी से संतोष करना चाहिए और जीवन को सकारात्मक ढंग से जीना चाहिए।

पाठ का सार

कोई भी व्यक्ति अपने वर्तमान स्वरूप में खुश नहीं दिखाई देता। बच्चे सोचते हैं कि काश वो भी बड़े होते तथा अपनी इच्छा के अनुसार काम करते। बड़े सोचते हैं कि काश वो भी बच्चे होते तो खूब उछल-कूद करते तथा किसी प्रकार की कोई चिंता न रहती। सुबल तथा सुशील दोनों को इच्छा रानी द्वारा मनचाहा रूप मिल जाता है। दोनों अपने मन की करते हैं मगर थोड़ी देर बाद ही पछताने लगते हैं। इच्छा देवी फिर से उनको पहले वाले रूप में ला देती हैं।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  इस नाटक का सार बच्चों को समझाएँ। बच्चों से उनके जीवन से जुड़ी घटना, उनकी इच्छा व उनकी आदतों के बारे में बातचीत करें। उन्हें बहानेबाज़ी से बचने के लिए प्रेरित करें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 23** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य व्याकरण एवं रचना पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - प्रश्न 6 सर्वनाम से संबंधित है। बच्चों को बताएँ कि नाम के बदले आने वाले शब्द वाक्य को या कथन को प्रभावी बनाते हैं। बोलने वाले, सुनने वाले और जिसके बारे में कहा जाए, उसके लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उसके बारे में उदाहरण देकर समझाएँ।
  - **एक** और **अनेक** का बोध कराने वाले शब्दों से बच्चे परिचित हो चुके हैं। आकारांत शब्दों के बहुवचन रूप में क्या परिवर्तन होता है, इसके बारे में बच्चों को बताएँ।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - इस पाठ का नाटक के रूप में प्रस्तुतीकरण विशेष अवसर पर करवाया जा सकता है। बच्चों से उनके बहाने बनाने के तरीकों के बारे में जानें। इसके लिए 'बहाना-प्रतियोगिता' भी कक्षा में आयोजित की जा सकती है। इस प्रतियोगिता के अंत में बहाना बनाने से होने वाली हानियों की चर्चा अवश्य करें।